स्नातक कार्यक्रम

बी.ए. संस्कृत (विशेष) कार्यक्रम

पाठ्यक्रम -**BSKC** -106

# काव्यशास्त्र और साहित्यिक आलोचना

सत्रीय कार्य

(जुलाई, **202**3 एवं जनवरी, **202**4 सत्रों के लिए)

**BSKC** -106

## काव्यशास्त्र और साहित्यिक आलोचना

मानविकी विद्यापीठ
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली- **110068**

# स्नातक कार्यक्रम

## सत्रीय कार्य (2023-24)

पाठ्यक्रम शीर्षक- काव्यशास्त्र और साहित्यिक आलोचना

पाठ्यक्रम कोड : **BSKC** -106/**2023-24**

प्रिय छात्र/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य **(TMA)** है। सत्रीय कार्य के लिए **100** अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जायेंगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िये :

1.) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनाँक लिखिए।

2.) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है :

---

अनुक्रमांक : .....

नाम : .....

पता : .....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : .....

सत्रीय कार्य कोड : .....

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : .....

दिनाँक : .....

# सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

**1.** अध्ययन: सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाईयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ विशेष बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढ़ग से व्यवस्थित कीजिए।

**2.** अभ्यास: उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिन्दु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबन्धात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरम्भ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरम्भिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढ़ग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क ) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख ) उत्तर सही ढ़ग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

ग ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियों न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

**3.** प्रस्तुति: जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ, तो उसे साफ़ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं के साथ।

---

**नोट: याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है, अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।**

---

**सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ:**

**जुलाई, 2023 सत्र के लिए : 31 मार्च, 2024**

**जनवरी, 2024 सत्र के लिए : 30 सितम्बर, 2024**

# सत्रीय कार्य

**BSKC** -106

## काव्यशास्त्र और साहित्यिक आलोचना

पाठ्यक्रम कोड : **BSKC** -106

पाठ्यक्रम शीर्षक : काव्यशास्त्र और साहित्यिक आलोचना

सत्रीय कार्य : **BSKC** -106/**TMA/2023-24**

**पूर्णांक : 100**

**नोट – सभी प्रश्न अनिवार्य हैं : -**

1. काव्य की उद्‌भव और विकास यात्रा को विस्तार से समझायें। 20

अथवा

काव्य के भेदों का विस्तार से वर्णन करें।

2. काव्यप्रकाश के अनुसार लक्षणा शब्दशक्ति का विशद् विवेचन करें। 20

अथवा

मम्मट के काव्य प्रयोजन का विस्तार से वर्णन करें।

3. कथा और आख्यायिका का लक्षण बताते हुए दोनों में अन्तर स्पष्ट करें। 10

अथवा

मम्मट के काव्य हेतु का निरूपण करें।

4. मम्मट के काव्य लक्षण की विवेचना करें। **10**

अथवा

रस की अलौकिकता पर निबन्ध लिखें।

5. उपमा अथवा श्लेष का लक्षण बताते हुए उदारण को स्पष्ट कीजिए। **10**

6. निम्नलिखित श्लोक में कौन–सा अलंकार है? लक्षण बताते हुए स्पष्ट कीजिए। **10**

ततोऽरूण परिस्पन्दमन्दीकृत वपुः शशी'
दधे काम परिक्षामकामिनिगण्डपाण्डुताम्

अथवा

अलङ्कारः शङ्काकरनरकपालं परिजनो
विशीर्णाङ्.गो भृङ्गी वसु च वृष एको बहुवयाः।
अवस्थेयं स्थाणोरपि भवति सर्वामरगुरो
र्विधौ वक्रे मूर्ध्नि स्थितवती वयं के पुनरमी ।।

7. अनुष्टुप् अथवा शार्दुलविक्रीडित छंद का लक्षण देते हुए उसके उदाहरण श्लोक का स्पष्टीकरण लिखिए। **10**

8. निम्नलिखित श्लोक में कौन–सा छंद है? उसका लक्षण बताते हुए स्पष्टीकरण दीजिएः **10**

उपेत्य नागेन्द्र तुरङग्तीर्णे तमारुणिं दारुणकर्मदक्षम्।
विकीर्ण बाणोग्रतुरङ्भङ्गे महार्णवामे युधि नाशयामि।।

अथवा

अस्त्युत्तरस्यां दिशिदेवतामा हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधि वगाह्यः, स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः।।